

English Translation  
OF THE  
**VEDIC PRAYER**



Dr. P. BAKSHI, B.E. M.  
Home Science Teacher,  
23 Shaheed Rastogi Marg,  
JABALPUR

2nd Edition-5000

Udampur (J&K)

Lodhi Rawan

Trust (Regd.)



DEDICATED

To the Everlasting Memory of  
My Beloved Son

**A/Capt. S. R. BAKSHI**

who was killed in action on  
24 September 65  
in the Defence of our Motherland.

## PREFACE

I am not a preacher or a missionary—I am a seeker of Truth. For sometime past, I have been searching for a suitable prayer in English. A prayer may be intellectually oriented or it may be emotionally oriented. Man is, by nature, agnostic; hence, an intellectual approach is perhaps more satisfying.

Swami Dayanand was an intellectual giant of outstanding stature. He acquired an unprecedented mastery of the Vedas, and gave us the quintessence of the Vedas in a rare selection of Vedic mantras which forms an admirable prayer. This prayer is in Sanskrit. I wanted an English translation of the same, but since I could not get



a proper translation anywhere, I started translating it myself. I am fully aware of my incompetence for the job, but I was impelled by an urge to go ahead with it.

I am sorry for the delay in issuing the second edition despite persistent demand. I have added in this edition, phonetic rendering of the Mantras in English, and also Hindi translation which I collected from here and there.

Both the Mantras and the translation (English or Hindi) should be recited daily to imbibe the spirit of these Mantras. 'More things are wrought by prayer than this world dreams of.' Therefore, please say these prayers daily and .... may God bless your prayers.

Jabalpur, 24 Sep. 72.

Dr. S. P. Bakshi



### आचमनमन्त्रः

ओऽम् शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये ।

शंयोरभिस्रवन्तु नः ।

(यजुर्वेद)

ओंकार प्रभु तेरा नाम, सर्व सुखों का है तू धाम  
ज्योति प्रकाशक ज्योति स्वरूप, सर्व व्यापक जगत अरूप  
आनन्द प्राप्ति हमें कराइये, सुख की वर्षा को बरसाइये

# OM

## Aachmanam Mantra

Om shanno devirabhishtaya, apo bhavantu pitaye.  
shanyorabhisravantu nah.

(Yajurveda)

*May God Almighty, the Fountain of Infinite Bliss,  
shower His blessings upon us. May He grant us our prayers.  
May He grant us peace and happiness.*

## इन्द्रियस्पर्शमन्त्रः

ओऽम् वाक् वाक् । ओं प्राणः प्राणः । ओं चक्षुः चक्षुः ।  
 ओं श्रोत्रम् श्रोत्रम् । ओं नाभिः । ओं हृदयम् । ओं कण्ठः ।  
 ओं शिरः । ओं बाहुभ्यां यशो बलम् । ओं करतलकरपृष्ठे ।

हे प्रभु ऐसी कृपा कीजें, वाणी मेरी मीठी कीजे ।

श्वास चलें मेरे ठीक प्रकार, इनमें न हो कोई विकार ।

आंखें मेरी पवित्र कीजे, इनमें नई नित ज्योति दीजे ।

नाभि हृदय शीश भुजायें, ये प्रभु से यश बल पायें ॥

## Indriya Sparsh Mantra

Om vak vak, Om pranah pranah, Om chakshu  
chakshu, Om shrotram shrotram, Om nabhih, Om  
hridayam, Om kanthah, Om shirah, Om bahubhyam  
yashobalam, Om kartal karprishthe.

*O Lord, bless the words I speak; bless the air I  
breathe; bless the light in my eyes; bless the sound in my  
ears; bless my navel organs and my heart. O Lord, grant  
strength to my neck; wisdom to my head; skill to my hands;  
and power to my arms and limbs.*

## मार्जनमन्त्रः

ओं भूः पुनातु शिरसि । ओं भुवः पुनातु नेत्रयोः ।  
 ओं स्वः पुनातु कण्ठे । ओं महः पुनातु हृदये । ओं जनः पुनातु  
 नाभ्याम् । ओं तपः पुनातु पादयोः । ओं सत्यं पुनातु पुनः  
 शिरसि । ओं खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र ।

प्राणों से हे प्यारे भगवन, सिर को करो पवित्र निशदिन ।  
 दुःख विनाशक दीन दयाला, आंखों में रहे ज्ञान उजाला ।  
 सर्व व्यापक सुख के दाता, करो पवित्र कण्ठ विधाता ।  
 महा प्रभु तुम पूज्य हमारे, हृदय करो पवित्र हमारे ।  
 करो पालना जगत बनाकर, नाभि मेरी करो पवित्र ।  
 दण्ड दाता प्रभु ज्ञान भंडारा, रहे पवित्र राह हमारा ।  
 सत्य स्वरूप अविनाशी ईश्वर, पुनः पवित्र करो मेरा सिर ।  
 महा प्रभु सर्वत्र व्यापक, करो पवित्र बुद्धि आदिक ।

## Marjanam Mantra

Om bhuh punatu shirasi, Om bhuvah punatu  
netrayoh, Om svah punatu kanthe, Om mahah punatu  
hridaye, Om janah punatu nabhayam, Om tapah punatu  
padayoh, Om satyam punatu punah shirasi, Om kham  
brahama punatu sarvatra.

*O Giver of Life, ennoble my thoughts; O Healer of  
wounds, sanctify my vision; O Bliss Infinite, sweeten my  
speech; O Mightiest One, purify my heart; O Great  
Creator, strengthen the centre of my body; O Dispenser of  
Justice, guide my footsteps; O Truth Eternal, ennoble my  
thoughts again; O All-pervading Lord, bless all my body*



### प्राणायाममन्त्रः

ओं भूः । ओं भुवः । ओं स्वः । ओं महः । ओं जनः ।  
ओं तपः । ओं सत्यम् ।

भू सबके जीवन के दाता, भुवः तुम हो ग़खों के वाता ।  
स्वः हो तुम सुख स्वरूप, महः हो महान रूप ।  
जनः सब सृष्टि के करता, तपः तीन तापों के हरता ।

**Pranayam Mantra**

Om bhuh, Om bhuvah, Om svah, Om mahah, Om  
janah, Om tapah, Om satyam.

*O Lord, Thou art the Giver of Life,  
Thou art the Source of Bliss,  
Thou art All Pervading,  
Omnipotent, Creator, Destroyer,*

## अधमर्षणमन्त्र

१

ओऽम् ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत ।  
 ततो रात्रजायत ततः समुद्रो अर्णवः ॥१॥  
 (ऋग०वेद)

अपनी सत्ता से परमेश्वर, प्रकृति से जगत बनाकर ।  
 ज्ञान दिया जग गुरु कहाया, वेदों का प्रकाश फैलाया ।  
 जोव वृक्ष पृथ्वी के अन्दर, सागर नदियां रचे समुद्र ।  
 जिस सत्ता से जग उपजावे, उसी से जग में प्रलय ले आवे ।

## Aghamarshanam Mantra

### I

Om ritamcha satyam chabiddhat tapso dhyajayata,  
Tato ratriya jayata, tatah samudro arnavah.

(Rigveda)

*God Almighty, the Source of All Existence, created the world, and manifested the Vedas for the guidance of mankind.*

*Out of Nothingness, God Almighty created Space. He then created in Space an ocean of seething vapours swirling ceaselessly. Then, after an endless time, out of these swirling vapours, God Almighty created the world.*

ओऽप् समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत ।  
 अहोरात्राणि विदधद्विष्वस्य मिषतो वशी ॥२॥

जगत को वश में रखने वाले, परमेश्वर के खेल निराले ।

## II

Om samudradarnavadadhi samvatsaro ajayata.  
Aho ratrani vidadhad vishwasya mishato vashi.

*Before the creation of the world, Time was non-existent. God Almighty created the Sun, the Moon,*

ओम् सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत् ।  
 दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः ॥३॥

चन्द्र सूर्य भूमंडल तारे, लोक लोकान्तर रच के सारे ।



## III

Om suryachandramasau dhata yathapurvamakalpayat  
Divam cha prithivim chantarikshamatho svah.

*God Almighty created the world, destroyed and recreated as in the previous cycles. Thus, God Almighty created the world of Light, the world of Twilight and the world of Darkness in which move the Sun, the Earth, and the countless stars.*

# मनसापरिक्रमाम त्राः

१

ओं प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षिताऽऽदित्या इषवः ।  
 तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम  
 एभ्यो अस्तु । योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विषमस्तं वो जम्भे दध्मः ॥१॥  
 (अथर्व वेद)

पूर्व दिशा में बैठकर, करे सूर्य प्रकाश ।  
 सब पर अधिपत करत है, सब में रहा है भास ॥  
 सबकी रक्षा करत हो, सबके हो करतार ।  
 नमस्कार हो आपको, मेरा बारम्बार ॥  
 अल्प बुद्धि से द्वेष करूं मैं, हमको है धिक्कार ।  
 न्याय समर्थ में छोड़ते, प्रभु तेरे ही आधार ॥

## Manasa-Parikrama Mantra

### I

Om prachi digagniradbipatirasito rakshita ditya  
ishavah, Tebhyo namo adhipatibhyo namo rakshitribhyo  
nama ishubhyo nama ebhyo astu. Yosman dweshti yam  
vayam dvishmastam vo jambhe dadhmah  
(Atharva-Veda)

*Omniscient Lord, Your Presence pervades  
our front, the East, where the Sun is the Deity. The rays of  
the Sun are his arrows which dispel darkness, and give us  
life and energy. Homage to Thee, O Lord, homage to the  
Sun, and to his rays which protect us.*

*Be Thou our Judge, O Lord, should someone harm us  
or should we harm someone in ignorance.*

ओं दक्षिणादिगिन्द्रोऽधिपति स्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर  
 इषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम  
 एभ्यो अस्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे  
 दध्मः ॥२॥

दक्षिण दिशा में तुम रहो, हे इन्द्र के स्वामी ।  
 सर्प आदि से रक्षा करो, तुम हो अन्तर्यामी ॥  
 ऋषियों द्वारा ज्ञान दो, हे ज्ञान के भंडार ।  
 नमस्कार हो आपको, मेरा बारम्बार ॥  
 अल्प बुद्धि से द्वेष करूं मैं, हमको है धिक्कार ।  
 न्याय समर्थ में छोड़ते, प्रभु तेरे ही आधार ॥

## II

Om dakshina digindro adhipati tiraschiraji rakshita  
pitara ishavah. Tebhyo namo dhipatibhyo namo rakshitri-  
bhyo nama ishubhyo nama ebhyo astu. Yosman dweshti  
yam vayam dwishmastam vo jambhe dadhmah.

*O Lord, Your Presence pervades the South, where  
Indra is the Deity. This is the land of our fathers who have  
attained salvation, who protect us from the crawling poiso-  
nous creatures. Homage to Thee, O Lord, homage to Indra,  
and to our fathers who protect us.*

*Be Thou our Judge, O Lord, should someone harm us  
or should we harm someone in ignorance.*

ओं प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षिताऽन्नमिषवः ।  
 तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो  
 अस्तुयोऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जग्भे दधमः ॥३॥

पश्चिम दिशा में बैठकर, सर्व श्रेष्ठ हो आप ।  
 वनधारी विषधारी से रक्षा करते आप ॥  
 अन्न के द्वारा जीवन दो, हे जीवन के भंडार ।  
 सब की रक्षा करत हो सबके हो करतार ॥  
 नमस्कार हो आपको, मेरा वारम्बार ।  
 भूल कर जिससे द्वेष करूँ मैं, हमको है धिक्कार ।  
 न्याय समर्थ पर छोड़ते प्रभु तेरे ही आधार ॥



## III

Om pratchi dig varuno adhipatih pridaku rakshita  
 annamishavah. Tebhyo namo adhipatibhyo namo rakshit-  
 ribhyo nama ishubhyo nama ebhyo astu. Yosman  
 dweshtiyam vayam dwishmastam vo jambhe dadhmah.

*O Lord, Your Presence pervades the West, where  
 Varuna is the Deity. He gives us food which nourishes us  
 and strengthens us. He protects us from huge and powerful  
 creatures through food. Homage to Thee, O Lord, homage to  
 Varuna, and his food which strengthens us.*

*Be Thou our Judge, O Lord, should someone harm  
 us or should we harm someone in ignorance.*



ओऽम्-उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजोरक्षिताऽशनिरिषवः ।  
 तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम  
 एभ्यो अस्तु । योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे  
 दधमः ॥४॥

उत्तर में तुम हे प्रभु, वसो शान्ति स्वरूप ।  
 विजली के द्वारा करो, रुधिर की गति हे भूप ॥  
 सबकी रक्षा करत हो, सबके हो करतार ।  
 नमस्कार हो आपको, मेरा धारम्बार ॥  
 भूलकर जिससे द्वेष करूँ मैं, हमको है धिक्कार ।  
 ध्याय समर्थ पर छोड़ते, प्रभु तेरे ही आधार ॥

## IV

Om udichi dik somodhipati svajo rakshita-shanir-  
ishvah. Tebhyo namo adhipatibhyo namo rakshatribhyo  
nama ishubhyo nama ebhyo astu. Yosman dweshti yam  
vayam dvishmastam vo jambhe dadhmah.

*O Lord, Your Presence pervades the North, where the  
Moon is the Deity. The lightning darts are his arrows. It is  
the electric charge in the body which maintains the flow of  
our life-blood. Homage to Thee, O Lord, homage to the  
Moon, and his power which sustains our lives.*

*Be Thou our Judge, O Lord, should someone harm us  
or should we harm someone in ignorance.*

ओं ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः कल्माष ग्रीवो रक्षिता वीरूध  
 इषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो  
 नम एभ्यो अस्तु । योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो  
 जम्भे दध्मः ॥५॥

नीचे से पालन करो विष्णु तुम भगवान् ।  
 धूप लता आदि वृक्ष से करो शुद्ध वायु भगवान् ॥  
 सबकी रक्षा करत हो, सबके हो करतार ।  
 नमस्कार हो आपको, मेरा बारम्बार ॥  
 जो अज्ञान से देवें क्लेश, या हम जिनसे करें द्वेष ।  
 हे न्यायकारी ईश हमारे, सौंमें उसको हाथ तुम्हारे ।

## V

Om dhruva digvishnuradhipatih kalmashagrivo  
 rakshita virudha ishawah. Tebhyo namo adhipatibhyo  
 namo rakshitribhyo nama ishubhyo nama ebhyo astu.  
 Yosman dweshti yam vayam dwishmastam vo jambhe  
 dadhmah.

*O Lord, Your Presence pervades the regions below us  
 where Vishnu is the Deity. The tall green trees and plants,  
 which protect our lives by purifying the air, are his arrows.  
 Homage to Thee, O Lord, homage to Vishnu, and his plants  
 and trees for our protection.*

*Be Thou our Judge, O Lord, should someone harm us  
 or should we harm someone in ignorance.*

ओं ऊर्ध्वादिक् बृहस्पतिरधिपतिः शिवत्रो रक्षिता वर्षमिषवः ।  
 तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।  
 योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दधमः ॥६॥

ऊपर से वर्षा करो, जल के हे भण्डार ।  
 खेती हमारी हो हरी, कहे यह सब संसार ॥  
 सबकी रक्षा करत हो, सबके हो करतार ।  
 नमस्कार हो आपको, मेरा बारम्बार ॥  
 जो अज्ञान से देवें क्लेश, या हम जिनसे करें द्वेष ।  
 हे न्यायकारी ईश हमारे, सौपें उसको हाथ तुम्हारे ।

## VI

Om urdhva dig brihaspatiradhipatih shwitro rakshita  
varshamishavah. Tebhyo namo adhipatibhyo namo  
rakshitribhyo nama ishubhyo nama ebhyo astu. Yosman  
dweshti yam vayam dwishmastam vo jambhe dadhmah.

*O Lord, Your Presence pervades the regions above us  
where Brihaspati is the Deity Who sways over us through  
rain. Through rain he gives us water which sustains our lives.  
Homage to Thee, O Lord, homage to Brihaspati, and the  
water so essential for us.*

*Be Thou our Judge, O Lord, should someone harm us  
or should we harm someone in ignorance.*



## उपस्थानमन्त्र

१

ओं उद्वयं तमसस्परिस्वः पश्यन्त उत्तरम् ।

देवं देवता सूर्यं मगन्मज्योतिरुत्तमम् ॥

(यजुर्वेद)

ज्योति दो ज्योति प्रकाशमय, अन्धकार हमसे जाये भाग ।

दिव्य गुणों की तुम हो खान, प्रलय पीछे रहो विद्यमान ॥



## Upasthan Mantra

### I

Om udvayam tamasaspariswah pashyanta uttaram.  
Devam devatra suryamaganmajyotiruttamama.

(Yajurveda)

*O Lord of Infinite Splendour, Thy Glory is hid behind the darkness of our ignorance. O Thou, Whom we yearn to know, O Thou, Who transcend Dissolution, lead us to thy Exquisite Light, which is the Source of light of all the Deities, and of all those whom the Deities protect.*

२  
 ओं उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः ।  
 दृशे विश्वाय सूर्यम् ।

(यजुर्वेद)

जैसे झंडियाँ राह दिखावे, तेरे पदार्थ तुझे दशविं ।  
 तुम हो सब वेदों के ज्ञाता, और सुखों के तुम हो त्राता ।  
 सृष्टि करता और विधाता । ।

## II

Om udutyam jatavedasam devam vehanti ketavah  
drishe vishwaya suryam.

(Yajurveda)

*O Lord, Thou hast created the world, and given us not only life but also knowledge through the Vedas ; and, every thing points to Thy Glory and Greatness, Almighty God.*

ओं चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः । आप्रा  
द्यावापृथिवी अन्तरिक्ष सूर्य्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा ॥३॥

यजुः० अ० ७, मन्त्र ४२

यद्यपि जग की सकल समग्री, महिमा है तेरी दर्शाती ।  
तो भी हो अनन्त रंगीले, बलदाता अद्भुत घमकीले ।  
चन्द्रसूर्यं घमकाने वाले, चराचर जगत बनाने वाले ।  
मन वाणी गुण कर्म स्वभाव, हे ईश्वर बलवान बनाओ ।

## III

Om chitram devanamudagadanikam chakshur  
 mitrasya varunasyagneh. Apra dyava prithvi antariksham  
 surya atma jagatastasthushashcha swah. ( Yajurveda )

*O Wondrous Lord, the Force behind the Heavenly  
 bodies is Thine; the light of the Sun, the Moon and the Stars  
 is Thine; O All-knowing Lord, the power of the Earth, the  
 Sky and the Worlds beyond is Thine; and life upon the  
 earth, both animate and inanimate is Thine.*

ओ३म् तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः  
 शतं जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः  
 शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥४॥

यजुर्वेद

हो आँखों की आँख पिताजी, देवों के महादेव अनादि ।  
 महिमा देखे सौ वर्ष तक, सुनें कीर्तन सौ वर्ष तक ।  
 सुख से जीवें सौ वर्ष तक, व्यावें ईश्वर सौ वर्ष तक ।  
 प्रेम लीन हूँ सौ वर्ष तक, स्वाधीन हूँ सौ वर्ष तक ।  
 सौ वर्ष से ज्यादा जीवें, ओ३म् नाम रस अमृत पीवें ।

## IV

Om tach chakshur devahitam purastachchhukramuch-  
 charat. Pashyema sharadah shatam, jivema sharadah  
 shatam, shrinuyama sharadah shatam, prabhavama  
 sharadah shatamadinah syama sharadah shatam, bhuyas-  
 hcha sharadah shatat.

( Yajurveda )

*With that Divine Eye which is granted to us, may we  
 see Thee Who art so Near, Ever-Present, Protector of us all.  
 Seeing Thee, may we live a hundred years; may our hearing  
 be sound a hundred years; may our speech be unfaltering a  
 hundred years, may we need no one's support a hundred  
 years; and, may we live like this more than a hundred years.*



## गायत्रीमन्त्रः

ओं भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो  
 यो नः प्रचोदयात् ।

ऋग वे. य. सा.

ओ३म्कार प्रभु तेरा नाम, गुण गावें संसार तमाम ।  
 प्राण स्वरूप प्राणों से प्यारा, दूर दुःखों के करने हारा ।  
 सुख स्वरूप सुखों का दाता, अन्त न कोई तुमरा पाता ।  
 सारे जग का पैदा करता सबसे उत्तम पाप का हरता ।  
 हे ईश्वर हम तुझे ध्यावें, पाप कर्म के पास न जावें ।

## Gayatri Mantra

Om bhurbhuvah swah,  
Tatsaviturvarenyam  
Bhargo devasya dhimahi,  
Dhiyo yo nah prachodayat.

(Rigveda, Yajurveda, Samveda.)

*We meditate upon the glorious effulgence of That  
Resplendent Sun, Who is the Source of All Existence, Who  
protects us from harm, Who saves us from suffering, Who  
grants us peace and happiness.*

*May His Divine Light shine within us, brighten our  
intelligence, and guide us on the right path.*

## समर्पणम मन्त्र

हे ईश्वर दयानिधे ! भवत्कृपयाऽनेन जपोपासनादिकर्मणा  
धर्मार्थिकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः ।

हे ईश्वर दयानिधे ! आपकी कृपा से जोजो उत्तम काम  
हम लोग करते हैं वे सब आपके समर्पण हैं। हे प्रभो ! हम, धर्म  
अर्थ, काम, और मोक्ष की सिद्धि को शीघ्र प्राप्त होवें ।

### Samarpan Mantra

Hey Ishwara Dayanidhe, bhavatkripaya anene japopasanadikarmana dharmarthkamamokshanam sadyah-siddhir bhavannah.

*By constant prayer and striving, whatever success I achieve in life, whatever good I am able to do, is all due to Thy Grace and Kindness, O Lord. I make an humble offering of all my gains in whatever field to Thee, O Lord. May I attain my ultimate goal which is spiritual salvation.*

### नमस्कारमन्त्रः

ओ३म् नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मय-  
स्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ।

य. अ. १६, मं. ४१ ।

नमस्कार कल्याण स्वरूपम्, नमस्कार हो प्रभू अनुपम ।  
नमस्कार सुखों के दाता, नमस्कार हो ईश विधाता ।  
नमस्कार हो शान्त भण्डारा, नमस्कार सौ बार हमारा ।  
ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः

# **Namaskar Mantra**

Om namah shambhavayacha mayobhavayacha  
namah shankarayacha mayaskarayacha namah shivayacha  
shivatarayacha.

( Yajurveda )

*O Lord, Who art the Source of all life, we bow to  
Thee; O Thou, Who art the Source of Infinite  
Bliss, we bow to Thee; O Thou, Who grants  
us well-being, we bow to Thee; O Thou, Who grants us  
happiness, we bow to Thee; O Thou Who art the Auspicious  
one, we bow to Thee; O Thou, Who art the most Auspicious  
of all, we bow to Thee. We bow to Thee. We bow to  
Thee. OM SHANTI, SHANTI, SHANTI.*



## NOTE

Being the inheritors of the Vedas, the most ancient of all the sacred books, containing Divine Revelations, it becomes our duty to know the Vedas, and to spread their message far and wide—the least we can do is to send to each and every person we know in our country or abroad, this sample of Vedic thought, and earn their blessings for blessing them with this precious gift. Thus may we spread Vedic Consciousness in the world, and give peace and solace to the suffering humanity which is today more sick in mind than in body.





